Mensaje 505

París, 30 de marzo del 2024

Una divina melodía (en hindi e inglés) para despertar en la divina melodía de la Vida-Amor

ब्रह्म-संगीत

Una divina melodía

सत्य, ब्रह्म, परम चैतन्य के प्रत्यक्षबोध को उपलब्ध होकर श्वेताश्वतरोपनिषद के ऋषि संपूर्ण मानवता के प्रति करुणा से द्रवित होकर यह "ब्रह्म संगीत" गा रहे हैं -

Después de percibir directamente la verdad —Brahman, el verdadero Yo— el sabio del "Shvetaashvatara Upanishad" entona compasivamente por toda la humanidad. esta "Divina Melodía".

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा,
आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः।
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वापि मृत्युमेति
नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।।

हे, अविनाशी चैतन्य में प्रतिष्ठित अमृत के सभी पुत्र, सुनो - उस परम (कालातीत) पुरुष का प्रत्यक्षबोध हुआ है, जो 'मैं'-पनारूपी अंधकार से परे सदा प्रकाशमान है। केवल उस परम पुरुष के प्रत्यक्षबोध से ही अमृत-जीवन के प्रवाह को उपलब्ध हुआ जा सकता है। अन्य कोई मार्ग नहीं है।

¡Oh. vosotros, inmortales hijos asentados en la inteligencia divina, escuchad!
Se puede percibir directamente la Suprema Inteligencia que trasciende el tiempo físico, que está más allá de la oscuridad del "yo" y que es siempre es esclarecedora. Al percibir directamente esa Suprema Inteligencia, uno fluye en la Vida Eterna. No hay otro camino.

यश्चायमस्मिन् आकाशे तेजोमय
अमृतमय पुरुषः सर्वानुभूः ।
यश्चायमस्मिन् आत्मनि तेजोमय
अमृतमय पुरुषः सर्वानुभूः ।
तमेव विदित्वापि मृत्युमेति
नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।।

और वह जो इस अनन्त अस्तित्व में स्थित प्रकाशमय नित्य पुरुष है, वही सब कुछ अर्थात् भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यत काल का साक्षी है। और इस शरीर में स्थित प्रकाशमय, नित्य पुरुष सब कुछ यानी कि जाग्रतावस्था, स्वप्नावस्था और सुषुप्ति अवस्था का साक्षी है। यहां दो नहीं है। उसके प्रत्यक्षबोध से ही मृत्यु की भ्रांति से परे अमृत-जीवन अनुभूत होता है। अन्य कोई मार्ग नहीं है।

Y esa Suprema Inteligencia, siempre iluminadora e inmortal, existente en este cielo (en toda la Existencia) es testigo de todo —pasado, presente y futuro—. Y esa Suprema Inteligencia en este cuerpo, es siempre testigo de nuestro estado de vigilia, del estado de sueño y del estado de sueño profundo. No hay dos. Al percibir

directamente esa Suprema Inteligencia, uno puede trascender la ilusión de la muerte. No hay otra manera de comprender la inmortalidad.

नैतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं
नातः परं वेदितव्यं हि किंचित्।
संप्राप्यैनमृषयो ज्ञानतृप्ताः
कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः।
तमेव विदित्वापि मृत्युमेति
नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।।

नित्य स्वयं में ही स्थित होने के कारण उसे जाना नहीं जा सकता। परंतु उसके अतिरिक्त और कुछ भी जानने योग्य नहीं है। ऋषिगण (अर्थात् तत्त्वदर्शी) उसे प्रत्यक्षबोध द्वारा पूर्णरूप से उपलब्ध होकर ज्ञानतृप्त, स्थिरचित्त, वीतराग (आसक्ति तथा विरक्ति से मुक्त) और प्रशांत हैं। केवल उस परम पुरुष के प्रत्यक्षबोध से ही विभेदकारी चित्तवृत्ति के पार जाया जा सकता है। अमृतत्व अर्थात् विभाजनरहित जागृति को उपलब्ध होने के लिए अन्य कोई मार्ग नहीं है।

Eso es incognoscible porque **Eso** es siempre existente en uno mismo. Sin embargo, nada vale la pena conocer excepto **Eso**. Los *rishis* (aquellos que han contemplado la verdad) después de haber sido accesibles a Eso al percibirlo directamente, están siempre asentados en la energía del conocimiento, con una menta aquietada, libres de apego y desapego y en una paz suprema sin perturbación ninguna. Al percibir directamente esta Suprema Inteligencia, uno puede trascender la conciencia divisiva. No hay otro camino para acceder a la inmortalidad o consciencia indivisa.

¡Gloria al *rishi*!
¡Gloria al *gurú*!